# मोतीलाल नेहरू महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

## राष्ट्रीय सेमिनार समिति

(हिन्दी, संस्कृत तथा पर्यावरण विज्ञान विभाग के सहयोग से आयोजित)

## दो-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय

# भारतीय ज्ञान परंपरा : इतिहास, वर्तमान और भविष्य

संगोष्ठी की तिथि: **24 - 25 अप्रैल, 2023**

### विषय की प्रस्तावना:

औपनिवेशिक विजय (Conquest) सिर्फ राजनीतिक विजय (Conquest) तक सीमित नहीं होती अपितु इनका दूरगामी असर संस्कृति, भाषा, दर्शन और ज्ञान/नॉलेज की विजय (Conquest) और उससे भी कहीं आगे तक होता है। यह शासित समाज और वर्ग की भाषा, संस्कृति, परंपरा, चिंतन और ज्ञान-प्रणालियों को बुनियादी रूप से बदलकर या उनके प्रति सोच को परिवर्तित कर उनसे उनकी मेधा और संस्थाओं को भी विच्छिन्न करने का कार्य करती है। इनसे प्रभावित समाज काफी हद तक अपनी दृष्टि, परंपरा और मौलिकता की जड़ों से कट जाता है।

भारतीय गणराज्य राजनीतिक रूप से स्वतंत्र एवं संप्रभु है। मगर भारतीय जनमानस की बौद्धिकता, रचनात्मकता और चिंतन को लेकर यह बात इतना ही आश्वस्त होकर नहीं कही जा सकती। लंबे समय के औपनिवेशिक शासन ने हमारे ज्ञान, चिंतन, लेखन और आलोचना के टूल्स को काफी कुछ बदल दिया है। इसके साथ ही पश्चिम केन्द्रित विकास की नीतियों और सोच ने उत्तर औपनिवेशिक भारतीय भाषायी, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं ज्ञान-परंपरा को गहरे रूप से प्रभावित किया है।

वर्तमान दौर में इसी भारतीय बौद्धिक 'तेजस्विता' एवं 'सांस्कृतिक स्वायत्तता' को कायम/पुनरसृजन करने की ज़रूरत पर बल दिया जा रहा है। दूसरी ओर भारतीय ज्ञान-प्रणालियों की मौलिकता की खोज अक्सर प्राचीन काल एवं वेद, पुराण युक्त तथाकथित 'स्वर्णिम युग' पर आ कर खत्म हो जाती है, जिससे इसकी विकासमान धारा का समवेत ज्ञान नहीं हो पाता है। इस तथाकथित 'विशुद्ध' भारतीय ज्ञान परंपरा की खोज की सीमितताओं को समझते हुए उसका सीमा विस्तार करने और उसके बाद के विभिन्न कालों की ज्ञान-मीमांसाओं को भी उसमें सम्मिलित करने की आवश्यकता है ताकि भारतीयता और भारतीय ज्ञान परंपरा के बहुलतावादी स्वर की सम्यक पहचान की जा सके।

प्रस्तावित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से हम इसी खोज एवं चिंतन को साहित्यिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शिक्षा-व्यवस्था, पर्यावर्णीय चिंतन और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य के विभिन्न पहलुओं से देखना-समझना चाहते हैं।

आज भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न पहलुओं के संदर्भ में औपनिवेशिक प्रभावों के अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है ताकि भारतीय ज्ञान परंपरा की वास्तविक धारा की पड़ताल करते हुए उसका सहयोग ऐसी वैकल्पिक नीतियों के निर्धारण एवं क्रियान्वयन में लिया जाए जो अतीत से लेकर वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा के भविष्य का मार्ग प्रशस्त करे, जो सिर्फ आदर्शवादी सैद्धांतिक बहस-मुबाहिसों के लिए उपयोगी न होकर अपने दृष्टिकोण और व्यवहार में भी समावेशी हो, जिसके आलोक में भविष्य के बहुरंगी और मजबूत भारत का निर्माण हो सके, जिसके मूल में सर्वजन हिताय और वसुधैव कुटुंबकम का आलोक हो।

संयोजक

**प्रो० धनंजय कुमार दुबे**

कार्यकारी प्राचार्य

**प्रो० योगेश्वर शर्मा**

********

☛ **संगोष्ठी में विमर्श हेतु प्रस्तावित निम्नलिखित बिंदु पर इच्छुक विद्यार्थी, शोधार्थी और अध्यापक शोध पत्र भी प्रस्तुत कर सकते हैं-**

1. भारतीय ज्ञान परंपरा का बुनियादी पक्ष (सिद्धांत और व्यवहार)
2. भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता
3. भारतीय ज्ञान परंपरा और इतिहास (इतिहास की निगाह में भारतीयता)
4. भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य
5. भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (कंटेंट और अनुवाद का प्रश्न)
6. भारतीय ज्ञान परम्परा और विज्ञान
7. भारतीय ज्ञान परंपरा और साहित्य (भाषा, साहित्य और सोद्देश्यता)
8. भारतीय ज्ञान परंपरा और कला एवं संस्कृति (सोशल मीडिया के दौर में कला और संस्कृति)
9. भारतीय ज्ञान परंपरा और वैश्विक संस्कृति (भूमंडलीकरण के दौर में भारतीयता)
10. भारतीय ज्ञान परंपरा और समाज (जाति, समुदाय, भाषा, लिंग आदि से जुड़े प्रश्न)
11. भारतीय ज्ञान परंपरा और अर्थशास्त्र (अर्थशास्त्र की भारतीयता बनाम भारतीयता का अर्थशास्त्र)
12. भारतीय ज्ञान परंपरा और राजनीति (राजनीति का मनोविज्ञान और भारतीयता)
13. भारतीय ज्ञान परंपरा और वाणिज्य
14. भारतीय ज्ञान परंपरा और पर्यावरणीय चिंतन

15. भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृति

16. भारतीय ज्ञान परंपरा और मानव मूल्य

17. भारतीय ज्ञान परंपरा: राष्ट्रवाद बनाम देशभक्ति आदि।

## ☛ संगोष्ठी में शोध पत्र प्रस्तुति के लिए शर्तें:

1. संगोष्ठी में भागीदारी और शोध पत्र प्रस्तुति के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन करना अनिवार्य है।

2. शोध पत्र 2500 (पच्चीस सौ) से 4000 (चार हज़ार) शब्दों के बीच होना चाहिए।

3. शोध पत्र यूनिकोड/मंगल फॉण्ट में होना चाहिए।

4. शोध पत्र के साथ मौलिकता का प्रमाण पत्र संलग्न होना चाहिए।

5. शोध पत्र में सन्दर्भ ग्रंथों का समुचित उल्लेख होना चाहिए।

6. चुनिंदा शोध पत्रों को संगोष्ठी के पश्चात पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जा सकता है।

7. पुस्तक में प्रकाशन के लिए चुनिंदा शोध पत्रों के चयन का अधिकार संपादक के पास होगा।

8. शोध पत्र भेजने का ईमेल पता: intsemmlnc23@gmail.com (अंतिम तिथि 23 अप्रैल 2023)

9. ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन का लिंक: https://forms.gle/eCRsgn879abMAteCA (अंतिम तिथि 22 अप्रैल 2023)

10. रजिस्ट्रेशन की राशि: 500/ (पाँच सौ) रुपये (अध्यापकों के लिए)

300/ (तीन सौ) रुपये (शोधार्थियों व विद्यार्थियों के लिए)

11. रजिस्ट्रेशन की राशि सिर्फ ऑनलाइन स्वीकार की जाएगी जिसका विवरण फॉर्म के अंदर मौजूद है।

12. शोध पत्र की एक स्वहस्ताक्षरित (नाम, पता, ईमेल पता, मोबाईल नंबर सहित) हार्डकॉपी की एक प्रति संगोष्ठी शुरू होने से पूर्व जमा कराना अनिवार्य है।

13. संगोष्ठी में शोध पत्र प्रस्तुत करनेवाले सहित सभी रजिस्टर्ड प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिया जाएगा।

14. जिनके शोध पत्र पुस्तक में प्रकाशित होंगे उन्हें पुस्तक की एक प्रति मुफ्त में दी जाएगी।

15. संगोष्ठी से संबंधित पूछताछ के लिए व्हाट्सएप कर सकते हैं, ज़रूरी हो तो फोन भी- 9811335071 / 9868035096

16. शोध पत्र प्रस्तुत करनेवाले को यात्रा व्यय खुद वहन करना होगा।

********

# MOTILAL NEHRU COLLEGE

University of Delhi

## National Seminar Committee

in collaboration with the Departments of Hindi, Sanskrit, and Environment Science

Organizes

## 2-Day International Seminar

On

# Indian Knowledge Tradition : History, Present and Future

24th & 25th April, 2023

## Concept Note

Colonial conquests were not limited to only political conquests but rather had a far-reaching impact on Culture, Language, Philosophy and Knowledge. It worked by fundamentally changing the language, culture, tradition, thinking and knowledge systems of the governed society and class, or by changing the way of thinking towards them and disconnecting them from their intelligence and institutions. The society affected by them, to a large extent, gets cut off from the roots of its vision, tradition and originality.

Indian Republic is politically independent and sovereign. But this cannot be said with the same confidence as far as the intelligence, creativity and thinking of the Indian public is concerned. The long period of colonial rule greatly changed the tools of our knowledge, thinking, writing, and criticism. Along with this, the policies and thinking of West-oriented development have deeply influenced the post-colonial Indian linguistic, cultural, economic, and public knowledge traditions.

In the present times, emphasis is being laid on the need to maintain/regenerate this Indian intellectual brilliance and autonomy. On the other hand, the search for the originality of Indian knowledge systems often ends at the ancient times and the Vedas, the Puranas, and the so-called Golden Age, due to which there is no comprehensive knowledge of its developing stream. Realizing the limitations of the search for this so-called pure Indian knowledge tradition, there is a need to expand its limits and incorporate epistemologies of different periods after that, so that Indianness and the pluralistic tone of the Indian knowledge tradition can be properly identified.

Through the proposed international seminar, we want to understand this discovery from different aspects of literary, historical, economic, education system, environmental thinking and political outlooks.

Today, there is a need to study the colonial effects in the context of various aspects of the Indian knowledge tradition, so that while examining the real stream of Indian knowledge, its cooperation is taken in the determination and implementation of such alternative policies, keeping in mind the circumstances from the past to the present. It should pave the way for the future of the Indian knowledge tradition, which is not only useful for theoretical debates, to be inclusive in its approach and behavior, in the light of which a multi-colored and strong India of the future can be built based on welfare of all as enshrined in the idea of *Vasudhev Kutumbakam*.

Convenor

**Prof. Dhananjay Kumar Dubey**

Acting Principal

**Prof. Yogeshwar Sharma**

********